NEXT IAS

# मध्यकालीन भारत का इतिहास

## सिविल सेवा परीक्षा 2025

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

**MADE EASY Publications Pvt. Ltd.**

**कॉर्पोरेट कार्यालय:** 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
**संपर्क सूत्र:** 011-45124660, 8860378007
**ई-मेल करें:** infomep@madeeasy.in
**विजिट करें:** www.madeeasypublications.org

## मध्यकालीन भारत का इतिहास

**© कॉपीराइट: Made Easy Publications Pvt. Ltd.**

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

**प्रथम संस्करण: 2024**

# विषयसूची

# मध्यकालीन भारत का इतिहास

## इकाई – I: मध्यकालीन भारत का आरंभ

### अध्याय 1


**प्रारंभिक मध्यकालीन भारत** ..... 2
(Early Medieval India) ..... 2
1.1 सामंतवाद (Feudalism) ..... 2
भारत में सामंतवाद (Feudalism in India) ..... 2
भूमि अनुदान में परिवर्तन (Changes in Land Grant) ..... 3
1.2 भारत और विश्व संबंध (India and World Relations) ..... 3
अरब (Arab) ..... 3
भारत के साथ अरब संपर्क (Arab Contact with India) ..... 4
सिंध की स्थिति (Condition of Sindh) ..... 4
सिंध पर अरबों की विजय (Arab Conquest of Sindh) ..... 4
विजय का महत्त्व (Significance of Conquest) ..... 5
अफ्रीका (Africa) ..... 5
पूर्वी एशिया (East Asia) ..... 5
भारत और जापान (India and Japan) ..... 6
भारत और कोरिया (India and Korea) ..... 6
दक्षिण-पूर्व एशिया (South-East Asia) ..... 6
पूर्व मध्य काल का भारत: महत्त्वपूर्ण तथ्य
(Early Medieval India: Important Facts) ..... 7


### अध्याय 2


**उत्तर भारत के राजवंश** ..... 8
(Dynasties of North India) ..... 8
2.1 पाल (Palas) ..... 8
परिचय (Introduction) ..... 8
राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र (Political Sphere of Influence) ..... 8
2.2 प्रतिहार (8वीं शताब्दी ई.) [Pratiharas (8th Century)] ..... 10
परिचय (Introduction) ..... 10
प्रभाव का राजनीतिक क्षेत्र
(Political Sphere of Influence) ..... 10
2.3 राष्ट्रकूट (Rashtrakutas) ..... 12
2.4 त्रिपक्षीय संघर्ष (Tripartite Struggle) ..... 12
कन्नौज का महत्त्व (Significance of Kannauj) ..... 12


### अध्याय 3


**दक्षिण भारत के राज्य** ..... 15
(Kingdoms of South India) ..... 15
3.1 परिचय (Introduction) ..... 15
3.2 चोल (Cholas) ..... 15
परिचय (Introduction) ..... 15
उत्तरवर्ती चोल (Later Cholas) ..... 15
महत्त्वपूर्ण शासक (Important Rulers) ..... 15
राजराज चोल प्रथम (985 – 1014 ई.) ..... 16
राजेंद्र चोल प्रथम (1014 – 44 ई.) ..... 16
राजव्यवस्था (Polity) ..... 17
प्रशासन (Administration) ..... 17
प्रांतीय प्रशासन (Provincial Administration) ..... 17
ग्राम सभाएँ (Village Assemblies) ..... 17
सेना (Millitary) ..... 17
राजस्व (Revenue) ..... 18
धर्म (Religion) ..... 18
अर्थव्यवस्था (Economy) ..... 18
समाज (Society) ..... 18
साहित्य (Litreture) ..... 19
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) ..... 19
साहित्य (Litreture) ..... 20
राजवंश का महत्त्व (Significance of Dynasty) ..... 20
3.3 चेर (Cheras) ..... 20
परिचय (Introduction) ..... 20
उत्तरवर्ती चेर (Later Cheras) ..... 20
राजव्यवस्था एवं प्रशासन (Polity and Administration) ..... 20
धर्म (Religion) ..... 21
अर्थव्यवस्था (Economy) ..... 21
समाज (Society) ..... 21
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) ..... 21
3.4 पांड्य (Pandyas) ..... 21
परिचय (Introduction) ..... 21
उत्तरवर्ती पांड्य (Later Pandyas) ..... 21
राजनीतिक इतिहास (Political History) ..... 22
राजव्यवस्था (Polity) ..... 22
प्रशासन (Administration) ..... 23

धर्म (Religion)....23
अर्थव्यवस्था (Economy)....23
साहित्य (Litreture)....23
कला एवं वास्तुकला (Art and Architecture)....23
राजवंश का महत्त्व (Importance of Dynasty)....24

## अध्याय 4

**राजपूत** (Rajputs)....28
4.1 परिचय (Introduction)....28
4.2 राजपूतों की उत्पत्ति (Origin of Rajputas)....28
4.3 राजपूत राज्य (Rajput Kingdoms)....28
हिंदूशाही राजवंश (Hindushahi Dynasty)....28
चौहान वंश (Chauhan Dynasty)....29
सोलंकी वंश (गुजरात का चालुक्य वंश)....29
परमार राजवंश (Paramar Dynasty)....29
चंदेल राजवंश (Chandell Dynasty)....29
गहड़वाल राजवंश (Gahadwal Dynasty)....29
बुंदेला राजवंश (Bundela Dynasty)....29
तोमर राजवंश (Tomar Dynasty)....30
4.4 अन्य राजपूत राज्य (Other Rajputs States)....30
4.5 राजपूतों की सीमाएँ (Limits of Rajputs)....30
4.6 राजपूतों का महत्त्व (Importance of Rajputs)....31

## इकाई – II: सल्तनत काल

## अध्याय 5

**भारत में तुर्कों का आगमन** (Advent of Turks in India)....34
5.1 परिचय (Introduction)....34
5.2 गजनवी (Ghaznavids)....34
5.3 महमूद गजनवी (Mahmud of Ghazni)....35
भारत पर आक्रमण (Indian Invasions)....35
गजनी के युद्ध (Ghazni's Battles)....35
सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण (Somnath Temple Raids)36
अल-बरूनी....37
फिरदौसी (Firdausi)....37
महमूद गजनवी का मूल्यांकन (Evaluation of Mahmud of Ghazni)....37
5.4 12वीं शताब्दी में परिवर्तन (Changes in 12th Century)....38
5.5 मुहम्मद गोरी (Muhammad Ghori)....38
पंजाब और सिंध विजय (Punjab and Sind Conquests)....38
तराइन का प्रथम युद्ध (First Battle of Tarain)....38
तराइन का द्वितीय युद्ध (Second Battle of Tarain)....38
मुहम्मद गोरी का मूल्यांकन (Evaluation of Muhammad Ghori)....39
5.6 गजनवी राजवंश: दिल्ली सल्तनत के गठन में भूमिका (Ghaznavi Dynasty: Role in Formation of Delhi Sultanate)....39

## अध्याय 6

**8वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान प्रमुख घटनाक्रम** (Major Developments During 8th to 15th Century)....41
6.1 परिचय (Introduction)....41
6.2 धर्म (Religion)....41
परिचय (Introduction)....41
बौद्ध धर्म का पतन (Decline of Buddhism)....41
मंदिरों का महत्त्व (Importance of Temples)....41
धार्मिक आंदोलन (Religious Movements)....42
उत्तर भारत में तंत्रवाद (Tantrism in North India)....42
भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement)....42
दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement in South India)....42
भक्ति संतों की विशेषताएँ (Characteristics of Bhakti Saints)....42
वीर शैव आंदोलन (Vir Shaiva Movement)....43
अद्वैत दर्शन (Advaita Philosophy)....43
विशिष्टाद्वैत दर्शन (Vishishtadvaita Philosophy)....43
सूफीवाद का विकास (Growth of Sufism)....43
6.3 अर्थव्यवस्था (Economy)....44
6.4 व्यापार और वाणिज्य (Trade and Commerce)....44
6.5 समाज (Society)....45
परिचय (Introduction)....45
सामाजिक विभाजन (Social Divisions)....45
जाति प्रथा (Cast System )....45
महिलाओं की स्थिति (Condition of Women)....45
6.6 शिक्षा की स्थिति (State of Education)....46
विज्ञान के पतन के कारण (Reasons for Decline in Science)....46
6.7 बारहवीं शताब्दी के बाद की भक्ति (Bhakti Post 12th Century)....46
गुरु नानक (Guru Nanak)....46
एकेश्वरवाद (Monotheism)....47
वैष्णववाद (Vaishnavism)....47
असम....48
8वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान प्रमुख घटनाक्रम: महत्त्वपूर्ण तथ्य (Major Developments During 8th to 15th Century: Important Facts)....50

## अध्याय 7

**दिल्ली सल्तनत 12वीं से 14वीं शताब्दी**
(Delhi Sultanate 12th to 14th Century)..... 53

7.1 उत्तर-पश्चिम से आक्रमण (Invasions from North-West) 53
अरब आक्रमण (Arab Invasion) ..... 53
सिंध में अरब शासन का प्रभाव
(Impact of Arab Rule in Sindh)..... 53

7.2 मामलूक सुल्तान (1206-90 ईस्वी)
[Mamluk Sultans (1206-90 AD)] ..... 53
परिचय (Introduction)..... 53
कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10 ईस्वी)
[Qutb-ud-din Aibak (1206-10 AD)] ..... 54
आरामशाह (1210-1211 ईस्वी)
[Aram Shah (1210-1211 AD)]..... 54
शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211-36 ईस्वी) ..... 54
रजिया सुल्तान (1236-40 ईस्वी)..... 55
नासिरुद्दीन महमूद (1246-66 ईस्वी) ..... 55
गयासुद्दीन बलबन (1266-87 ईस्वी)..... 55
बलबन का राजत्व सिद्धांत
(Theory of Kingship of Balban)..... 56
सिजदा और पैबोस (Sijada and Paibos)..... 56
प्रशासन (Adminstration)..... 56
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) ..... 56
राजवंश का महत्त्व (Importance of Dynasty) ..... 57

7.3 ख़िलज़ी, (1290-1320 ईस्वी)
[Khaljis (1290-1320 AD)] ..... 57
परिचय (Introduction)..... 57
जलालुद्दीन ख़िलज़ी (1290-96 ईस्वी)..... 57
अलाउद्दीन ख़िलज़ी (1296-1316 ईस्वी) ..... 57
सल्तनत का विस्तार (Sultanate's Expansion)..... 58
प्रशासनिक व्यवस्था (Administrative System)..... 58
ख़िलज़ी के बाजार संबंधी सुधार (Market
Reforms of Khalji Dynasty)..... 58
सैन्य सुधार (Military Reforms) ..... 59
राजस्व सुधार (Revenue Reforms)..... 59
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) ..... 59

7.4 तुग़लक़ (1320-1412 ईस्वी) [Tughlaqs (1320-
1412 AD)] ..... 60
परिचय (Introduction)..... 60
गियासुद्दीन तुग़लक़ (1320-25 ईस्वी)
[Ghiyas-ud-din Tughlaq (1320-25 AD)]..... 60
मुहम्मद-बिन-तुग़लक़ (1325-51 ईस्वी)
[Muhammad Bin Tughlaq (1325-51 AD)]..... 60
सुधार (Reforms)..... 60
फिरोज़शाह तुग़लक़ (1351-88 ईस्वी) ..... 61
तुग़लक़ प्रशासन (Tughlaq Administration)..... 62
तुग़लक़ कला और वास्तुकला
(Tughlaq Art and Architecture) ..... 62
राजवंश का महत्त्व (Importance of Dynasty) ..... 63

7.5 सैय्यद वंश (1414-51 ईस्वी) ..... 63
परिचय (Introduction)..... 63

7.6 लोदी वंश (1451-1526 ईस्वी) ..... 63
परिचय (Introduction)..... 63
बहलोल लोदी (1451-1489 ईस्वी) ..... 64
सिकंदर लोदी (1489-1517 ईस्वी)..... 64
इब्राहिम लोदी (1517-1526 ईस्वी)
[Ibrahim Lodi (1517-1526)] ..... 64
प्रशासन (Adminstration) ..... 64
साहित्य (Literature)..... 65
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) ..... 65

7.7 दिल्ली सल्तनत: चुनौतियाँ
(Delhi Sultanate: Challenges) ..... 65
अमीरों के बीच आंतरिक संघर्ष
(Inner Conflict among Nobility) ..... 65
मंगोल एवं अन्य आक्रमण
(Mongols and other Invasions) ..... 66
भारतीय सरदारों का विरोध
(Resistance by Indian Chiefs)..... 66
प्रांतीय राज्यों का उदय
(Emergence of Provincial Kingdoms)..... 66

## अध्याय 8

**क्षेत्रीय राजवंश** (Regional Dynasties)..... 71

8.1 परिचय (Introduction) ..... 71
8.2 कश्मीर (Kashmir)..... 71
8.3 जौनपुर (Jaunpur) ..... 72
8.4 बंगाल (Bengal) ..... 73
8.5 मालवा (Malwa) ..... 73
8.6 मेवाड़ (Mewar)..... 74
राणा सांगा..... 75
8.7 गुजरात (Gujrat)..... 75
8.8 विजयनगर साम्राज्य (Vijayanagara Empire) ..... 76
परिचय (Introduction)..... 76
आधार (Foundation)..... 76
प्रमुख शासक (Important Rulers)..... 76
राजव्यवस्था एवं प्रशासन (Polity and Administration) 78
अर्थव्यवस्था (Economy)..... 78
समाज (Society)..... 78
धर्म (Religion)..... 78
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) ..... 78

साहित्य (Literature)....79
पतन के कारण (Reasons for Decline)....80
निष्कर्ष (Conclusion)....80
8.9 बहमनी साम्राज्य (1347 – 1527 ईस्वी) (Bahmani Kingdom)....80
परिचय (Introduction)....80
महमूद गवाँ (1463-1482) (Mahmud Gawan)....80
राजव्यवस्था एवं प्रशासन (Polity and Administration) 81
कला और वास्तुकला (Art and Architecture)....81
निष्कर्ष (Conclusion)....82
8.10 पुर्तगालियों का आगमन (Advent of Portuguese)....82
परिचय (Introduction)....82
वास्को डी गामा (Vasco Da Gama)....82
हिंद महासागर में प्रभुत्व (Supremacy in Indian Ocean)....82
व्यापार, समाज और राजनीति पर प्रभाव (Impact on Trade, Society - Politics)....83

## इकाई – III: मुग़ल काल

### अध्याय 9

**उत्तर भारत के लिए संघर्ष (1525-55 ईस्वी)**....88
Struggle For North India (1525-55 AD)....88
9.1 मुग़ल (Mughals)....88
9.2 बाबर (Babur)....88
भारत की विजय (Conquest of India)....88
युद्ध (Battles)....89
भारत में बाबर के सामने चुनौतियाँ (Challenges Faced by Babur in India)....91
बाबर के आगमन का महत्त्व (Significance of Babur's Advent)....91
9.3 हुमायूँ (Humayun)....92
परिचय (Introduction)....92
अफगानों की वापसी और उत्थान (Retreat and Rise of the Afghans)....93
हुमायूँ का उत्तरवर्ती जीवन (Humayun's Later Life)....93
9.4 सूर वंश (Sur Dynasty)....94
परिचय (Introduction)....94
शेरशाह सूरी (Sher Shah Suri)....94
राजव्यवस्था (Polity)....94
संघर्ष: हुमायूँ और शेरशाह (Encounters: Humayun and Sher Shah)....94
प्रशासन (Administration)....95
धर्म (Religion)....96
अर्थव्यवस्था (Economy)....96
कला और वास्तुकला (Art and Architecture)....96
राजवंश का महत्त्व (Importance of Dynasty)....96
पतन के कारण (Reasons for Decline)....97
उत्तर भारत के लिए संघर्ष (1525-55 ईस्वी): महत्त्वपूर्ण तथ्य (Struggle for North India (1525-55 AD): Important Facts)....97

### अध्याय 10

**मुगल साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण**....100
Consolidation of Mughal Empire....100
10.1 परिचय (Introduction)....100
10.2 अकबर (Akbar)....100
परिचय (Introduction)....100
प्रतिस्पर्धा (Contests)....100
साम्राज्य का विस्तार (1560-76 ईस्वी) [Expansion of Empire (1560-76 AD)]....102
गढ़-कटंगा (Garh-Katanga)....102
प्रशासन (Administration)....104
राजनीतिक प्रशासन (Political Administration)....106
राजपूतों से संबंध (Relations with Rajputs)....106
धर्म (Religion)....107
मूल्यांकन (Evaluation)....108
10.3 जहाँगीर....108
परिचय (Introduction)....108
प्रारंभिक चुनौतियाँ (Initial Challenges)....109
विजय और अभियान (Conquests and Campaigns)....109
नूरजहाँ....110
धर्म (Religion)....110
यूरोपीय लोगों से संबंध (Relation with Europeans)....110
जहाँगीर के शासनकाल का मूल्यांकन (Evaluation of Jahangir*s Reign)....110
10.4 शाहजहाँ....111
परिचय (Introduction)....111
विजय (Conquests)....111
धार्मिक नीति (Religious Policy)....112
यूरोपीय व्यापारियों के साथ संबंध (Relation with European Traders)....112
उत्तराधिकार का युद्ध (War of Succession)....113
शाहजहाँ के शासनकाल का मूल्यांकन (Evaluation of Shah Jahan's Reign)....113
10.5 औरंगजेब....113
परिचय (Introduction)....113
उत्तरी चरण (1658-81 ईस्वी) [Northern Phase (1658981 AD)]....114

लोकप्रिय विद्रोह (Popular Revolts) ..... 114
राजपूत नीति (Rajput Policy)..... 115
दक्कन चरण (1681 – 1707 ईस्वी)
[Deccan Phase (1681 – 1707 AD)]..... 115
प्रशासन (Administration) ..... 117
धार्मिक नीति (Religious Policy) ..... 118
औरंगजेब के शासनकाल का मूल्यांकन
(Evaluation of Aurangzeb*s Reign) ..... 118
10.6 विश्लेषण (Analysis)..... 118
मुगल साम्राज्य के पतन के कारण
(Causes of Decline of Mughal Empire) ..... 118
मुगल शासन का प्रभाव
(Impact of the Mughal Rule)..... 119

## अध्याय 11

**दक्कन राज्य**..... 126
Deccan States..... 126
11.1 परिचय (Introduction) ..... 126
11.2 दक्कन 1595 ईस्वी तक (Deccan up to 1595)..... 126
विजयनगर का विघटन
(Disintegration of Vijaynagara) ..... 126
आपसी संघर्ष (Mutual Conflicts) ..... 126
नृजातीय संघर्ष और सांप्रदायिक हिंसा
(Ethnic Strife and Sectarian Violence)..... 127
महदवी संप्रदाय का उदय (Rise of Mahdawism)..... 127
मराठों का बढ़ता प्रभाव
(Increasing Influence of Marathas)..... 127
पुर्तगालियों की बढ़ती शक्ति
(Growing Power of Portuguese)..... 128
11.3 मुगलों का दक्कन की ओर आगे बढ़ना
(Mughal Advance towards Deccan)..... 128
11.4 बरार, खानदेश और अहमदनगर के कुछ हिस्सों पर
विजय (Conquest of Berar, Khandesh and Parts of
Ahmednagar)..... 128
अकबर के राजनयिक मिशनों की विफलता
(Failure of Akbar*s Diplomatic Missions) ..... 128
अहमदनगर के शासक की मृत्यु
(Death of Ruler of Ahmednagar)..... 129
चाँद बीबी द्वारा प्रतिरोध
(Resistance by Chand Bibi) ..... 129
अहमदनगर की दूसरी घेराबंदी
(Second siege of Ahmednagar)..... 130
खानदेश की विजय (Conquest of Khandesh)..... 130
मुर्तजा द्वितीय के साथ समझौता
(Agreement with Murtaza II)..... 131
बीजापुर से मित्रता की कोशिश
(Attempt to befriend Bijapur) ..... 131
11.5 मलिक का उदय (Rise of Malik) ..... 131
मराठों और बीजापुर की सहायता
(Help of Marathas and Bijapur)..... 131
मुगलों द्वारा क्षेत्रों की हानि
(Loss of Territories by Mughals) ..... 132
आमेर के विरुद्ध मुगल और मराठा
(Mughals and Marathas Against Ambar) ..... 132
जहाँगीर की गैर-विस्तारवादी नीति
(Non&Eñpansionist Policy of Jahangir)..... 132
सत्ता पर दोबारा कब्जा करने में मलिक अंबर के
असफल प्रयास (Failed Efforts of Malik Ambar
to Recapture Power)..... 133
भटवाड़ी का युद्ध (1624)
[Battle of Bhatvadi (1624)] ..... 133
मलिक अंबर का मूल्यांकन
(Assessment of Malik Ambar)..... 134
11.6 मुगल आधिपत्य (Mughal Suzerainty) ..... 134
शाहजहाँ का शासनकाल (Reign of Shahjahan)..... 134
मुगल नीति में परिवर्तन (Change in Mughal Policy) 134
अहमदनगर पर कब्जा करने का प्रयास
(Efforts to Capture Ahmednagar) ..... 134
बीजापुर और अहमदनगर के बीच समझौता
(Agreement between Bijapur and
Ahmednagar) ..... 135
फतह खान को पुरस्कार और शाहजी भोंसले द्वारा
दल-बदल (Reward for Fath Khan and
Defection by Shahji Bhosle)..... 135
गलों के लिए कठिन समय
(Difficult Times for Mughals) ..... 135
शाहजहाँ द्वारा बीजापुर पर आक्रमण
(Invasion of Bijapur by Shah Jahan)..... 136
अहदनामा की संधि (Treaty of Ahdanama) ..... 136
गोलकुंडा के साथ संधि (Treaty with Golconda)..... 136
इन संधियों का प्रभाव (Effect of these Treaties) ..... 136
11.7 शाहजहाँ और दक्कन (1636-57 ईस्वी)
[Shah Jahan and the Deccan (1636-57 AD)]..... 136
11.8 दक्कन राज्यों का सांस्कृतिक योगदान
(Cultural Contributions of Deccan States)..... 137
उर्दू और अन्य भाषाएँ (Urdu and other Languages)138
चित्रकला (Painting)..... 138
वास्तुकला (Architecture)..... 139

## अध्याय 12

**मुगल प्रशासन**..... 141
Mughal Administration ..... 141
12.1 केंद्रीय प्रशासन (Central Administration)..... 141
परिचय (Introduction)..... 141
सम्राट (Emperor) ..... 141

वजीर (Wazir) ..... 141
दीवान-ए-कुल ..... 143
मीर बख्शी (Mir Bakshi) ..... 143
मीर समन (Mir Saman) ..... 143
सद्र-उस-सुदूर (Sadr-us Sudur) ..... 143
प्रमुख काजी (Chief Qazi) ..... 143
12.2 प्रांतीय प्रशासन (Provincial Administration) ..... 143
परिचय (Introduction) ..... 143
प्रांतीय गवर्नर/सूबेदार (Provincial Governor) ..... 143
दीवान (Diwan) ..... 144
बख्शी (Bakshi) ..... 144
दरोगा-ए-डाक (Daroga-i-Dak) ..... 144
खुफिया/गुप्त सेवाएँ (Secret Services) ..... 144
12.3 स्थानीय प्रशासन (Local Administration) ..... 144
सरकार (Sarkar) ..... 144
परगना प्रशासन (Pargana Administration) ..... 144
कोतवाल (Kotwal) ..... 144
किलादार (Qiladar) ..... 144
12.4 सैन्य व्यवस्था (Military System) ..... 144
परिचय (Introduction) ..... 144
मनसबदारी व्यवस्था (Mansabdari System) ..... 145
जागीरदारी प्रथा (Jagirdari System) ..... 146
12.5 आर्थिक प्रशासन (Economic Administration) ..... 146
परिचय (Introduction) ..... 146
भू-राजस्व (Land Revenue) ..... 147
भू-राजस्व के अलावा अन्य कर
(Taxes other than Land Revenue) ..... 148
मुद्रा प्रणाली (Currency System) ..... 149
12.6 न्यायपालिका (Judiciary) ..... 150
12.7 उत्तराधिकार की नीति (Policy of Succession) ..... 150
12.8 अन्य भारतीय राज्यों के साथ संबंध
(Relations with other Indian States) ..... 151
परिचय (Introduction) ..... 151
राजपूत (Rajputs) ..... 152
दक्कन और दक्षिण भारतीय राज्य
(Deccan and South Indian States) ..... 153
सिक्ख (Sikhs) ..... 154
जाट (Jats) ..... 155
उत्तर-पूर्वी राज्य (North Eastern Kingdoms) ..... 155

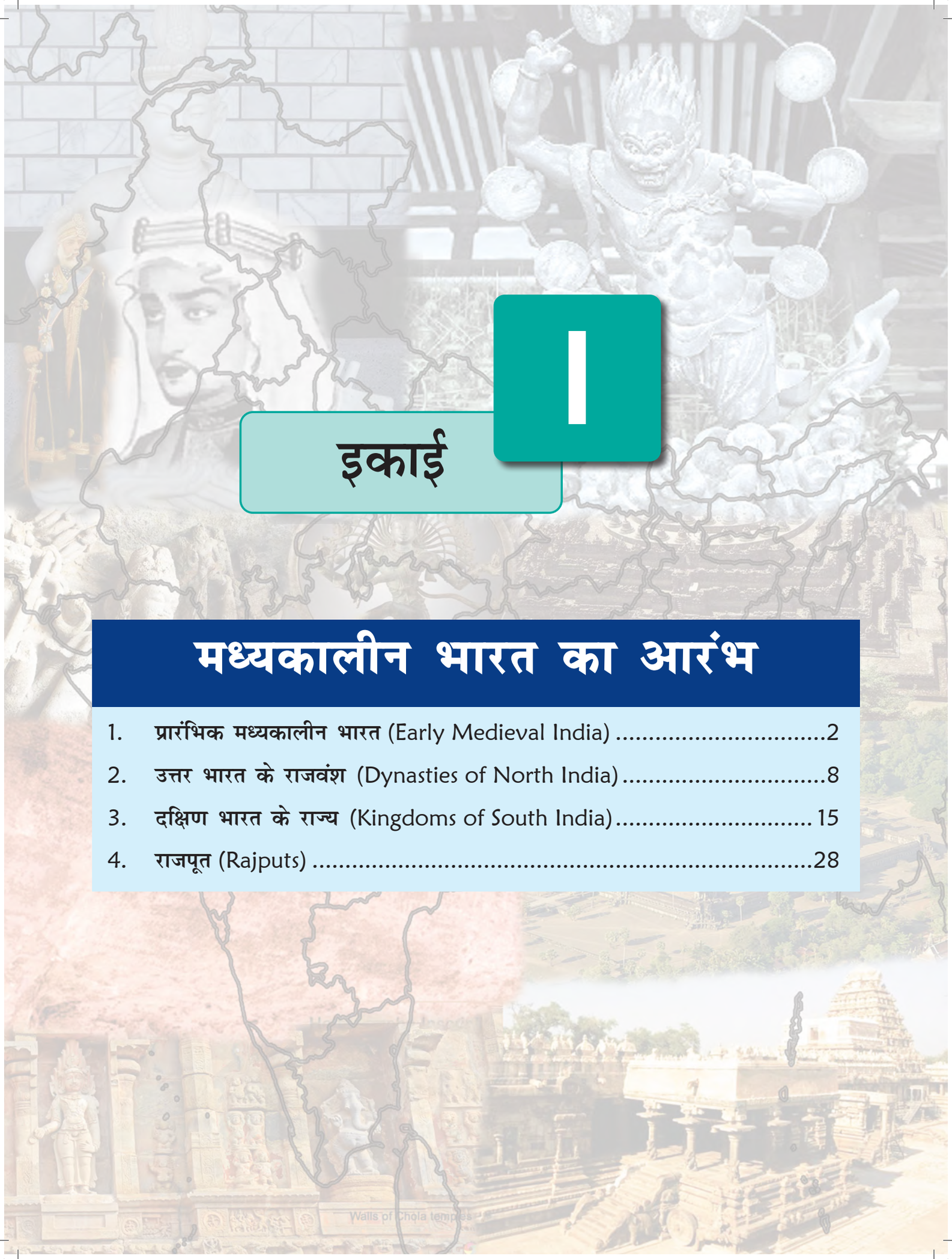

# इकाई I

## मध्यकालीन भारत का आरंभ

1. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत (Early Medieval India) ..... 2

2. उत्तर भारत के राजवंश (Dynasties of North India) ..... 8

3. दक्षिण भारत के राज्य (Kingdoms of South India) ..... 15

4. राजपूत (Rajputs) ..... 28

अध्याय

1

# प्रारंभिक मध्यकालीन भारत

## (Early Medieval India)

### 1.1 सामंतवाद (Feudalism)

सामंतवाद मध्यकालीन यूरोप में कानूनी और सैन्य प्रणालियों का एक मिश्रित रूप था, जो 9वीं और 15वीं शताब्दी ईस्वी के बीच व्यापक स्तर पर विकसित हुआ था। यह एक ऐसी प्रणाली थी, जिसमें राजा अभिजातों (Nobles) को भूमि देते थे। बाद में फिर यह भूमि अभिजात अपने जागीरदारों (राजभक्ति और निष्ठा की शर्तों पर भूमि के धारक) की माँग पर उन्हें सैन्य और अन्य सेवाओं के बदले में दे देते थे।

भारतीय उपमहाद्वीप में प्रारंभिक मध्य काल में एक समान प्रणाली विकसित हुई, जिसके तहत अक्षम और कमज़ोर राजा मुद्रा में भुगतान करने के बजाय भूमि अनुदान के माध्यम से मुआवज़ा (Compensation) देते थे। भारतीय सामंतवाद की प्रकृति यूरोपीय सामंतवाद की प्रकृति से काफ़ी अलग थी, जिसे इतिहासकार भी पूरी तरह से अलग व्यवस्था के रूप में देखते हैं।

#### भारत में सामंतवाद (Feudalism in India)

भारत में सामंतवाद का आरंभ प्रारंभिक मध्य काल के आगमन के साथ हुआ, जब गुप्त काल के अंत के दौरान शहरी केंद्रों और वाणिज्यिक गतिविधियों में गिरावट के कारण गाँव आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो गए थे। पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान राजाओं ने ब्राह्मणों (जिन्हें ब्रह्मादेय कहा जाता है), विद्वानों और अन्य धार्मिक संस्थानों को मुफ्त में भूमि दान करना प्रारंभ किया था। इस प्रकार, भूमि का स्वामित्व प्रदान किया गया और राजस्व एकत्र करने का अधिकार दिया गया। ब्राह्मणों को भूमि अनुदान देने की प्रथा एक ऐसी प्रथा थी, जिसे धर्मशास्त्रों, महाकाव्यों और पुराणों में निर्धारित आदेशों द्वारा अनुमति दी गई थी। महाभारत के अनुशासन पर्व में भूमिदान (भूमिदान प्रशंसा) प्रथा की प्रशंसा और गुणगान के लिए एक पूरा अध्याय समर्पित है। भूमि अनुदान के बदले में राजाओं को किसानों से संबंध बनाने और उन पर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखने में मदद मिली।

अभिलेख अंकन

**ब्रह्मदेय**

भूमि की उपज पर कर इकट्ठा करने, स्थानीय संसाधनों पर नियंत्रण रखने और गाँवों के प्रबंधन के अधिकार के साथ प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में राजाओं द्वारा ब्राह्मणों या ब्राह्मणों के समूह को उपहार के रूप में कर मुक्त गाँव दिये गए थे।

सामंतवाद के विकास के साथ, भूमि पर सामुदायिक अधिकार कम हो गया था। चारागाह-भूमि (Pasture-lands), कच्छ-भूमि (Marshes) और जंगल राजा द्वारा उपहार के रूप में दिए जाते थे। इस प्रकार, एक मध्यवर्गीय भूमिधारकों/भू-स्वामियों (Land Owner) का उदय हुआ तथा किसानों ने अपने भूमि अधिकार खो दिए। उन्हें बड़े कर चुकाने और बेगार करने के लिए विवश किया गया। उनकी स्थिति दासों के स्तर तक सीमित कर दी गई। भविष्य में भी ज़मीन के हस्तांतरण (Transfer) की संभावना थी और वास्तव में ऐसा हुआ भी।

राजस्व अधिकारों के हस्तांतरण के साथ-साथ, इस प्रणाली के परिणामस्वरूप विशेष रूप से ब्राह्मणों को प्रशासनिक अधिकार भी हस्तांतरित हो गए। इसके परिणामस्वरूप ब्राह्मण सामंतों को बढ़ावा मिला। इसके अलावा, राजस्व और प्रशासनिक शक्तियों के समाप्त होने से राज्य का विघटन हुआ और राजा की शक्ति कमज़ोर हो गई। भारतीय सामंतवाद की विशेषताओं को संक्षेप में निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

- **राजनीतिक विकेंद्रीकरण (Political Decentralization):** भूमि अनुदान के रूप में प्राप्त विकेंद्रीकरण धीरे-धीरे सामंतों, महासामंतों आदि जैसे अर्ध-स्वायत्त शासकों से बनी एक विशिष्ट शाखा वाले राजनीतिक संगठन में बदल गया।
- **नए वर्ग का उद्भव (Emergence of New Class):** सामंतवाद के परिणामस्वरूप भूमिधारकों के मध्यवर्ग का उदय हुआ, जो एक प्रमुख सामाजिक समूह बन गया। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में यह वर्ग नहीं था और भूमि अनुदान की प्रथा से जुड़ा था, जो सातवाहनों के समय में आरंभ हुई थी।
- **कृषि संरचना में परिवर्तन (Changes in Agrarian Structure):** सामंतवाद की प्रगति के साथ छठी शताब्दी ईस्वी के बाद से किसान लाभार्थियों को दी गई भूमि पर ही आश्रित रहे। इससे लोगों की गतिशीलता अवरुद्ध हो गई, जिसके परिणामस्वरूप उनके और शेष विश्व के बीच दूरियाँ बढ़ गईं। इसका बड़ा निहितार्थ स्थानीय रीति-रिवाज़ों, भाषाओं और रीति-रिवाज़ों के विकास में था।

### भूमि अनुदान में परिवर्तन (Changes in Land Grant)

उत्तरवर्ती मौर्य काल से भूमि अनुदान में राजस्व के सभी स्रोतों का हस्तांतरण और पुलिस एवं प्रशासनिक कार्यों को सौंपना भी शामिल था। दूसरी शताब्दी ईस्वी के अनुदानों में राजा के नियंत्रण को केवल नमक पर हस्तांतरित करने का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ है कि उसने राजस्व के कुछ अन्य स्रोतों को बनाए रखा था, जबकि ऐसा नहीं था। कुछ अन्य अनुदानों में यह भी उल्लिखित है कि दाता (राजा) ने राजस्व के लगभग सभी स्रोतों पर अपना नियंत्रण छोड़ दिया था, जिसमें चारागाह, खदानें, छिपे हुए खजाने और भंडार शामिल थे।

बाद के काल में दानकर्ता ने न केवल अपना राजस्व छोड़ दिया था, बल्कि अनुदान में दिये गए गाँवों के शासन का अधिकार भी छोड़ दिया था। गुप्तकाल में यह प्रथा अधिक प्रचलित हो गई थी। गुप्त काल के दौरान ब्राह्मणों के स्पष्ट रूप से बसे हुए गाँवों के अनुदानों के कई उदाहरण हैं। ऐसे अनुदानों में कृषकों और कारीगरों सहित निवासियों को उनके संबंधित शासकों/राजाओं द्वारा स्पष्ट रूप से कहा गया था कि वे न केवल दान प्राप्तकर्ताओं को पारंपरिक कर का भुगतान करें, बल्कि उनकी आज्ञाओं का पालन भी करें। यह राज्य की प्रशासनिक शक्ति के हस्तांतरण का स्पष्ट प्रमाण है।

राजा की संप्रभुता का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह था कि वह अपराधियों को दंड देने का अधिकार अपने पास रखता था। गुप्तोत्तर काल में राजा ने न केवल यह अधिकार, बल्कि परिवार, संपत्ति, व्यक्ति आदि के विरुद्ध सभी अपराधों को दंडित करने का अधिकार भी ब्राह्मणों को सौंप दिया था।

## 1.2 भारत और विश्व संबंध (India and World Relations)

### अरब (Arab)

अरब विश्व के प्राथमिक जनसंख्या समूहों में से एक है। अरबों का प्राथमिक निवास पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफ़्रीका, हॉर्न ऑफ अफ्रीका और पश्चिमी हिंद महासागर द्वीपों में विस्तारित अरब संसार में है। इस्लाम-पूर्व काल से ही अरबों के भारतीयों के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध रहे थे। भारतीयों और अरबों के बीच अरब सागर के रास्ते व्यापार होता था।

मसाले और अन्य विदेशी उष्णकटिबंधीय उत्पाद भारत और अरब संसार के बीच व्यापार और वाणिज्य का मुख्य आधार थे। अरब संसार से आयात में कॉफी, घोड़े और अन्य भूमध्यसागरीय उत्पाद (Mediterranean Products) शामिल थे। इसलिए व्यापार को सुरक्षित करने के उद्देश्य से अरब व्यापारियों ने भारत के पश्चिमी तट पर अपनी स्थायी बस्तियाँ बसाई थीं। इन बस्तियों ने भारत-अरब सांस्कृतिक संबंधों के आदान-प्रदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंद महासागर में व्यापार मार्ग

- इंडोनेशिया और थाईलैंड जैसे देशों में भारतीय मूल के शीर्ष नेता रहे हैं, जिन्होंने भारत को उसके स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ उसके वैश्विक एजेंडे में भी मदद की।
- दक्षिण-पूर्व एशिया एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक समूह (आसियान) के रूप में उभरा है और भारत आसियान का एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार है।

अंकोरवाट और बोरोबुदुर मंदिर

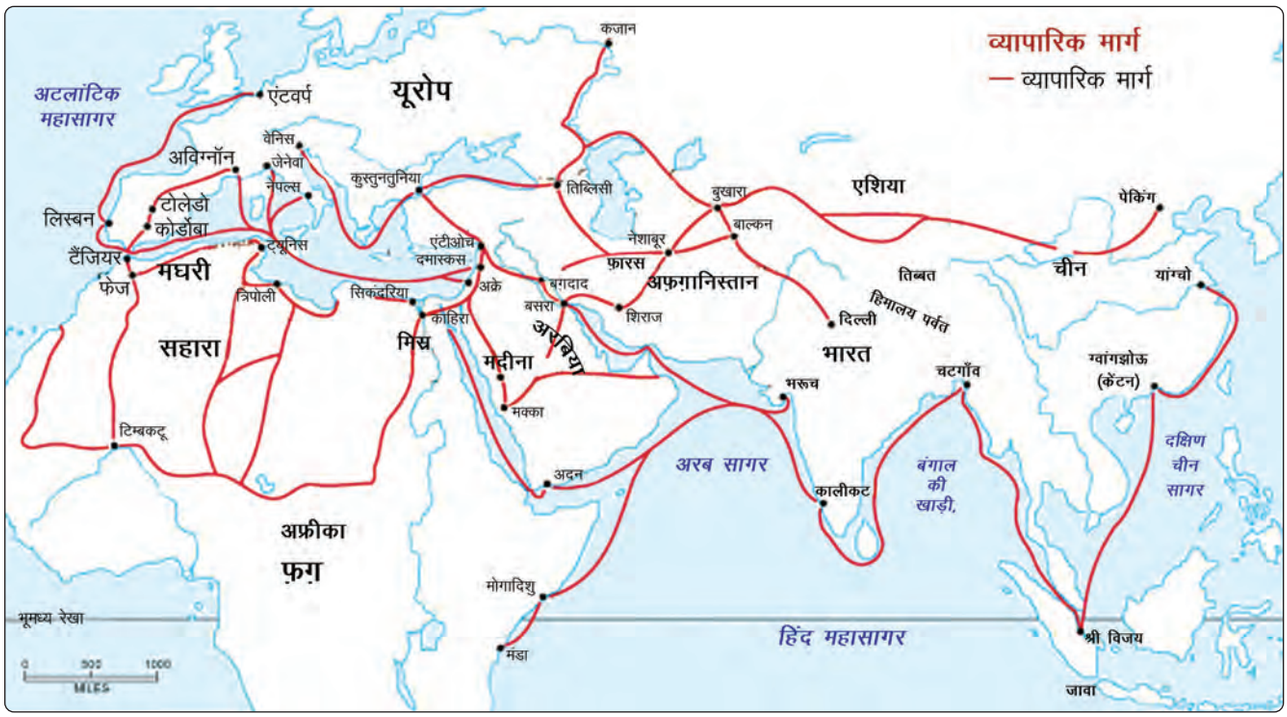


## पूर्व मध्य काल का भारत: महत्त्वपूर्ण तथ्य
## (Early Medieval India: Important Facts)

- 712 ई. में बसरा के गवर्नर अल-हज्जाज ने अपने भतीजे और दामाद मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में सिंध के शासक दाहिर के विरुद्ध एक अभियान का नेतृत्व किया। इस अभियान ने सिंध को अरबों के अधीन कर दिया था।
- इस अभियान का कारण न तो क्षेत्रीय विस्तार की इच्छा थी और न ही धार्मिक। श्रीलंका के राजा ने तुर्की के राजा को कुछ उपहार भेजे थे, जिन्हें सिंध के देबल में समुद्री लुटेरों ने लूट लिया। सिंध के शासक दाहिर ने इस घटना के प्रति अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हुए क्षति की भरपाई करने से मना कर दिया था। इससे अल-हज्जाज क्रोधित हो गया और उसने सिंध पर आक्रमण कर दिया।

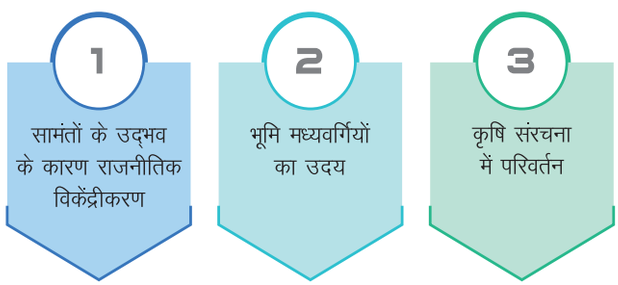


भारतीय सामंतवाद की विशेषताएँ

■■■■

अध्याय

# 2

# उत्तर भारत के राजवंश

## (Dynasties of North India)

## 2.1 पाल (Palas)

### परिचय (Introduction)

गौड़ राजा शशांक की मृत्यु के बाद बंगाल लगभग एक शताब्दी तक अराजकता और अव्यवस्था के दौर से गुज़रा। आंतरिक अव्यवस्था ने बंगाल को बाह्य आक्रमण के प्रति संवेदनशील बना दिया था। बंगाल में व्याप्त अराजकता को समाप्त करने के लिए गौड़ राज्य के प्रमुख सदस्यों ने एक सभा आयोजित की, जिसमें गोपाल को अपना राजा चुनने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार, गोपाल (जिसे गोपाल-I के नाम से भी जाना जाता है) लगभग 750 ई. में बंगाल के प्रसिद्ध पाल राजवंश का संस्थापक बना था।

### राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र (Political Sphere of Influence)

धर्मपाल का साम्राज्य

#### धर्मपाल

धर्मपाल

धर्मपाल, गोपाल-प्रथम का उत्तराधिकारी बना और उसे पाल शासकों में सबसे योग्य शासक के रूप में जाना जाता था। वह सैन्य प्रबंधन में कुशल था और उसने कई राज्यों पर विजय प्राप्त की थी। उसने कन्नौज के शासक राजकुमार को भी सिंहासन से हटाकर, वहाँ अपना उम्मीदवार नियुक्त किया था। उसका लंबा एवं गौरवशाली शासनकाल लगभग 30 वर्षों तक चला था।

देवपाल भी अपने पिता की तरह एक शक्तिशाली शासक था। उसने हूणों और कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार राजा के विरुद्ध सफल लड़ाई लड़ी थी। उसके साम्राज्य में उत्तर में कंबोज से लेकर दक्षिण में विंध्य तक का विशाल क्षेत्र शामिल था। सुमात्रा के राजा ने भी उसके दरबार में एक राजदूत भेजा था।

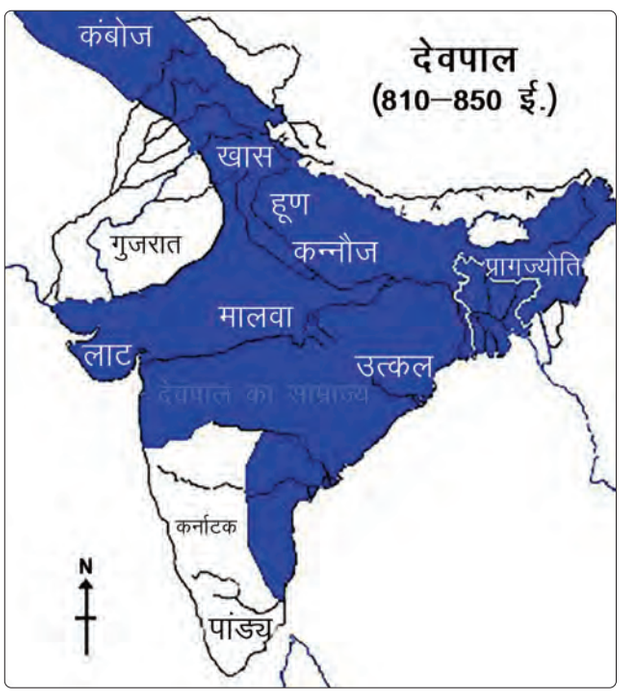


देवपाल का साम्राज्य